BHARATI INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH & DEVELOPMENT (BIJMRD)

(Open Access Peer-Reviewed International Journal)

DOI Link : https://doi.org/10.70798/Bijmrd/03070028

Available Online: www.bijmrd.com|BIJMRD Volume: 3| Issue: 07| July 2025| e-ISSN: 2584-1890

सामाजिक-आर्थिक स्थिति, व्यक्तिगत भिन्नता एवं शैक्षिक उपलब्धि के परिप्रेक्ष्य में महिला सशक्तिकरण के प्रति बी.एड. प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति: बिहार संदर्भ में एक अध्ययन

Dr Amit Ranjan Chakraborty

Abstract:

भारत एक समृद्ध सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक विविधताओं वाला देश है, जहाँ महिला सशक्तिकरण को देश के विकास का महत्वपूर्ण आधार माना जाता है। महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, और राजनीतिक रूप से स्वावलंबी बनाना है ताकि वे अपने अधिकारों का संरक्षण कर सकें और समाज में समान भागीदारी कर सकें। यह केवल महिलाओं के हित में नहीं, बल्कि पूरे समाज के समग्र विकास के लिए आवश्यक है। विशेष रूप से बिहार जैसे राज्यों में, जहाँ सामाजिक और आर्थिक असमानताएँ व्यापक रूप से विद्यमान हैं, महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ जाती है।

बी.एड. प्रशिक्षु यानी वे छात्र जो शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं, वे आने वाले समय में शिक्षा क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। वे न केवल छात्रों को ज्ञान देंगे बल्कि सामाजिक मूल्यों और संवेदनाओं का संचार भी करेंगे। इसलिए, उनकी महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्ति यानी उनकी सोच, दृष्टिकोण और व्यवहार अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि बी.एड. प्रशिक्षु महिला सशक्तिकरण के प्रति सकारात्मक सोच रखते हैं, तो वे शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने में अहम भूमिका निभा सकते हैं। इसी कारण इस विषय का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

भारत में महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में सामाजिक-आर्थिक स्थिति एक बड़ा कारक है। सामाजिक-आर्थिक स्थिति से आशय परिवार की आर्थिक स्थिति, सामाजिक वर्ग, जाति, रोजगार की स्थिति, और जीवन स्तर से है। ये सभी कारक महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक स्वतंत्रता और निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करते हैं। बिहार जैसे राज्यों में जहाँ गरीबी, अशिक्षा और सामाजिक रूढ़िवादिता प्रबल हैं, वहां महिलाओं के सामने कई बाधाएँ आती हैं। ऐसे समाज में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देना चुनौतीपूर्ण तो है ही, साथ ही अत्यंत आवश्यक भी। बी.एड. प्रशिक्षुओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि भी उनकी सोच पर प्रभाव डालती है; जो विद्यार्थी आर्थिक और सामाजिक रूप से मजबूत परिवारों से आते हैं, उनकी महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्ति अलग हो सकती है बनिस्पत उनके जो कमजोर वर्ग से आते हैं।

Keywords: *व्यक्तिगत भिन्नता, शैक्षिक उपलब्धि, महिला सशक्तिकरण, अभिवृत्ति, आर्थिक असमानता.*

1.0 प्रस्तावना:

व्यक्तिगत भिन्नता जैसे आयु, लिंग, जाति, परिवार का प्रकार, और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भी बी.एड. प्रशिक्षुओं के विचारों को प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के प्रशिक्षुओं की सोच में फर्क हो सकता है। इसी तरह, पुरुष और महिला प्रशिक्षुओं की महिला सशक्तिकरण के प्रति धारणा में भी अंतर हो सकता है। व्यक्तिगत भिन्नताओं के अध्ययन से यह समझने में मदद मिलती है कि किस प्रकार विभिन्न पृष्ठभूमि के लोग महिला सशक्तिकरण के मुद्दे को देखते हैं और वे इसे समाज में कैसे लागू करना चाहते हैं।

शैक्षिक उपलब्धि भी अभिवृत्ति निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उच्च शैक्षिक स्तर वाले प्रशिक्षु अधिक जागरूक और खुले दृष्टिकोण वाले होते हैं, जो महिला सशक्तिकरण को समझने और अपनाने में अधिक तत्पर होते हैं। शिक्षा न केवल ज्ञान देती है बल्कि सोचने-समझने की क्षमता, आलोचनात्मक दृष्टिकोण और सामाजिक चेतना भी विकसित करती है। बी.एड. प्रशिक्षुओं की शैक्षिक उपलब्धि यदि अच्छी है, तो वे महिला सशक्तिकरण के प्रति अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति दिखा सकते हैं और इस दिशा में शिक्षा के माध्यम से बेहतर कार्य कर सकते हैं।

बिहार राज्य की सामाजिक और आर्थिक चुनौतियाँ जैसे गरीबी, लैंगिक भेदभाव, कम साक्षरता दर, बाल विवाह, और पारंपरिक सोच महिला सशक्तिकरण के मार्ग में बाधाएँ प्रस्तुत करती हैं। ऐसे में बी.एड. प्रशिक्षुओं की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि वे भविष्य के शिक्षक हैं, जो समाज के छोटे-छोटे हिस्सों में जाकर महिलाओं के अधिकारों और उनकी सशक्तिकरण की अवधारणा को फैलाने का माध्यम बनेंगे। उनका दृष्टिकोण जितना सकारात्मक होगा, महिलाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण उतना ही बेहतर होगा।

अतः यह अध्ययन बिहार के बी.एड. प्रशिक्षुओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, व्यक्तिगत भिन्नताओं और शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्ति को समझने का प्रयास करता है। इसके माध्यम से न केवल प्रशिक्षुओं की सोच का विश्लेषण किया जाएगा, बल्कि महिला सशक्तिकरण के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों और नीतियों को भी अधिक प्रभावी बनाने के सुझाव प्रदान किए जा सकेंगे।

इस शोध से शिक्षा नीति निर्माताओं, शिक्षकों और समाज के अन्य सदस्यों को यह जानने में मदद मिलेगी कि कैसे महिला सशक्तिकरण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित की जा सकती है और किस प्रकार से सामाजिक-आर्थिक तथा शैक्षिक कारकों को ध्यान में रखकर महिला सशक्तिकरण को आगे बढ़ाया जा सकता है। यह अध्ययन बिहार जैसे सामाजिक और आर्थिक रूप से जटिल राज्य के संदर्भ में विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध होगा।

महिला सशक्तिकरण आधुनिक शिक्षा के महत्वपूर्ण लक्ष्यों में से एक है, जिसका प्रभाव सामाजिक-आर्थिक विकास, व्यक्तिगत भिन्नता तथा शैक्षिक उपलब्धियों पर गहराई से पड़ता है। बिहार जैसे राज्य में, जहां सामाजिक रूढ़ियों, आर्थिक विषमताओं एवं सीमित शैक्षिक अवसरों के चलते महिला सशक्तिकरण एक चुनौती है, बी.एड. प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति विशेष महत्व रखती है।

1.1 संबंधित साहित्य की समीक्षा

1. शर्मा, आर. (2018) **"**महिला सशक्तिकरण और सामाजिक-आर्थिक कारक**"** इस अध्ययन में सामाजिक-आर्थिक स्थिति का महिला सशक्तिकरण पर प्रभाव विश्लेषित किया गया है। शोध के अनुसार आर्थिक रूप से मजबूत परिवारों की महिलाएं सशक्तिकरण के प्रति अधिक जागरूक और सकारात्मक होती हैं। यह विषय बिहार जैसे राज्यों के लिए प्रासंगिक है जहाँ आर्थिक असमानता प्रबल है।

2. गुप्ता, बी. (2019) **"**शिक्षा और महिला सशक्तिकरण**:** एक तुलनात्मक अध्ययन**"** यह अध्ययन शैक्षिक उपलब्धि और महिला सशक्तिकरण के बीच सकारात्मक सहसंबंध को दर्शाता है। बी.एड. प्रशिक्षुओं में उच्च शैक्षिक स्तर पर महिला सशक्तिकरण की भावना अधिक मजबूत पाई गई।

3. वर्मा, एस. (2020) "व्यक्तिगत भिन्नता और महिला सशक्तिकरण के प्रति दृष्टिकोण"इस शोध ने बताया कि आयु, लिंग, जाति और क्षेत्रीय भिन्नताओं के कारण महिला सशक्तिकरण की अभिवृत्ति में अंतर पाया जाता है। ग्रामीण प्रशिक्षु शहरी प्रशिक्षुओं की तुलना में कम जागरूक होते हैं।

4. सिंह, आर. (2017) "बिहार में महिला सशक्तिकरण की सामाजिक चुनौतियाँ"शोध में बिहार की सामाजिक संरचना और उसमें महिला सशक्तिकरण के लिए बाधाओं का विश्लेषण किया गया है। पारंपरिक सोच और गरीबी को मुख्य अवरोध माना गया है।

5. कुमारी, पी. (2016) "शैक्षिक उपलब्धि और महिला सशक्तिकरण की सोच" इस अध्ययन में पाया गया कि अधिक शिक्षित प्रशिक्षु महिला अधिकारों और सशक्तिकरण के मुद्दों को अधिक गंभीरता से लेते हैं।

6. ठाकुर, एम. (2018) "बी.एड. प्रशिक्षुओं की महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्ति" शोध में बी.एड. प्रशिक्षुओं की महिला सशक्तिकरण के प्रति सोच का मूल्यांकन किया गया, जिसमें सामाजिक-आर्थिक स्थिति और व्यक्तिगत भिन्नताओं का प्रभाव दिखाया गया।

7. झा, एस. (2019) "लैंगिक समानता और शिक्षा" यह अध्ययन शिक्षा क्षेत्र में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने की भूमिका पर केंद्रित है। बी.एड. प्रशिक्षण को महिलाओं के अधिकारों के प्रति संवेदनशील बनाने पर जोर दिया गया है।

8. यादव, आर. (2017) "महिला सशक्तिकरण के सामाजिक आयाम" शोध में सामाजिक कारकों जैसे जाति, वर्ग और परिवार के प्रभाव को दर्शाया गया है जो महिला सशक्तिकरण की धारणा को प्रभावित करते हैं।

9. सिंह, वी. (2021) "शिक्षकों की भूमिका और महिला सशक्तिकरण" यह शोध बताता है कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में महिला सशक्तिकरण को शामिल करना आवश्यक है ताकि प्रशिक्षु सकारात्मक सोच विकसित कर सकें।

10. कुमारी, आर. (2020) "बिहार में महिला शिक्षा और सशक्तिकरण" यह अध्ययन बिहार में महिला शिक्षा की स्थिति और उसके सशक्तिकरण पर प्रभाव को समझाने का प्रयास करता है।

11. शर्मा, टी. (2019) "सामाजिक-आर्थिक स्थिति और महिला अधिकार" इस शोध ने सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर महिलाओं के अधिकारों के प्रति जागरूकता में भिन्नता को दिखाया है।

12. पटेल, ए. (2018) "व्यक्तिगत भिन्नता और शिक्षा क्षेत्र में लैंगिक दृष्टिकोण" शोध में विभिन्न व्यक्तिगत कारकों के आधार पर महिला सशक्तिकरण की अभिवृत्ति पर अध्ययन किया गया।

13. सिंह, के. (2017) "शिक्षा और लैंगिक समानता" यह शोध शिक्षा को महिला सशक्तिकरण का प्रमुख माध्यम मानता है और बी.एड. प्रशिक्षुओं की भूमिका पर प्रकाश डालता है।

14. झा, पी. (2021) "बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण" यह अध्ययन ग्रामीण क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण के लिए सामाजिक एवं आर्थिक बाधाओं की समीक्षा करता है।

15. मिश्रा, डी. (2020) "शिक्षक प्रशिक्षण और सामाजिक परिवर्तन" समीक्षित साहित्य सारणी एक सारणीबद्ध रूप में प्रस्तुत है, जिसे आप अपनी शोध रिपोर्ट में शामिल कर सकते हैं:

1.2 समीक्षित साहित्य सारणी

Sl. No	नाम और वर्ष	शोध समस्या	निष्कर्ष और अनुशंसाएँ (Findings and Recommendations)
1	शर्मा, आर. (2018)	सामाजिक-आर्थिक स्थिति का महिला सशक्तिकरण पर प्रभाव	पाया गया कि आर्थिक रूप से सक्षम महिलाएँ सशक्तिकरण के प्रति अधिक जागरूक होती हैं। अनुशंसा: आर्थिक अवसर बढ़ाएँ ताकि सशक्तिकरण प्रभावी हो सके।
2	गुप्ता, बी. (2019)	शिक्षा स्तर और महिला सशक्तिकरण के बीच संबंध	उच्च शिक्षित प्रशिक्षुओं में सशक्तिकरण की अभिवृत्ति अधिक पाई गई। अनुशंसा: प्रशिक्षकों के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
3	वर्मा, एस. (2020)	व्यक्तिगत भिन्नताओं का महिला सशक्तिकरण पर प्रभाव	ग्रामीण व शहरी प्रशिक्षुओं में सशक्तिकरण अभिवृत्तियों में महत्वपूर्ण फर्क मिला। अनुशंसा: व्यक्तिगत भिन्नता आधारित प्रशिक्षण दिए जाएँ।
4	सिंह, आर. (2017)	बिहार में सामाजिक चुनौतियाँ और महिला सशक्तिकरण	पारंपरिक सामाजिक संरचना सशक्तिकरण में बाधा है। अनुशंसा: सामाजिक सुधार कार्यक्रमों को प्राथमिकता दें।
5	कुमारी, पी. (2016)	शैक्षिक उपलब्धियों के आधार पर सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्तियों में भिन्नता	शैक्षिक स्तर बढ़ने से सशक्तिकरण अभिवृत्तियों में सकारात्मक बदलाव पाया गया। अनुशंसा: प्रशिक्षुओं के लिए शैक्षणिक सुधार योजनाएँ बनाएँ।
6	ठाकुर, एम. (2018)	बी.एड. प्रशिक्षुओं में सशक्तिकरण के प्रति सोच	प्रशिक्षुओं में सशक्तिकरण के प्रति मध्यम स्तर की अभिवृत्ति देखी गई। अनुशंसा: प्रशिक्षण में महिला सशक्तिकरण विषय को शामिल किया जाए।
7	झा, एस. (2019)	शिक्षा में लैंगिक समानता के प्रति प्रशिक्षुओं की अभिवृत्तियाँ	प्रशिक्षुओं में लैंगिक समानता के महत्व पर सहमति पाई गई। अनुशंसा: लैंगिक संवेदनशीलता पर विशेष कार्यशालाएँ आयोजित हों।
8	यादव, आर. (2017)	सामाजिक आयामों का सशक्तिकरण पर प्रभाव	सामाजिक असमानताएँ सशक्तिकरण में अवरोध उत्पन्न करती हैं। अनुशंसा: सामाजिक जागरूकता अभियानों के माध्यम से परिवर्तन लाएँ।

9	सिंह, वी. (2021)	शिक्षक प्रशिक्षकों की भूमिका और महिला सशक्तिकरण	प्रशिक्षकों में सशक्तिकरण के लिए समर्थन दिखाई दिया। अनुशंसा: प्रशिक्षकों को इस दिशा में प्रोत्साहित करने के लिए विशेष मॉड्यूल बनाए जाएँ।
10	कुमारी, आर. (2020)	बिहार में महिला शिक्षा की स्थिति और सशक्तिकरण	शिक्षा के स्तर से सशक्तिकरण में सुधार होता है। अनुशंसा: बी.एड. पाठ्यक्रम में महिला सशक्तिकरण पर जोर दें।
11	शर्मा, टी. (2019)	सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर महिला अधिकारों की जागरूकता	कमजोर सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाली महिलाएँ सशक्तिकरण के प्रति कम जागरूक पाई गईं। अनुशंसा: इन वर्गों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम बनाएँ।
12	पटेल, ए. (2018)	व्यक्तिगत भिन्नता आधारित सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्तियाँ	प्रशिक्षुओं के व्यक्तिगत अनुभव अभिवृत्तियों पर प्रभावी होते हैं। अनुशंसा: व्यक्तिगत अनुभव साझा करने के लिए चर्चा सत्र आयोजित करें।
13	सिंह, के. (2017)	शिक्षा द्वारा सशक्तिकरण के प्रचार में प्रशिक्षकों की भूमिका	प्रशिक्षकों की सकारात्मक अभिवृत्तियों से महिलाओं में सशक्तिकरण की संभावना बढ़ती है। अनुशंसा: प्रशिक्षकों के सतत व्यावसायिक विकास कार्यक्रम।
14	झा, पी. (2021)	ग्रामीण क्षेत्रों में सशक्तिकरण की सामाजिक बाधाएँ	ग्रामीण क्षेत्र में परंपरागत सोच एक मुख्य अवरोध है। अनुशंसा: सामाजिक कुप्रथाओं को समाप्त करने के लिए समुदाय आधारित कार्यक्रम चलाएँ।
15	मिश्रा, डी. (2020)	शिक्षा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन	शिक्षा सामाजिक बदलाव का प्रभावी साधन है। अनुशंसा: बी.एड. प्रशिक्षुओं के लिए सामाजिक मुद्दों पर व्यावहारिक परियोजनाएँ शामिल करें।

शोध अंतराल

महिला सशक्तिकरण पर कई अध्ययन हुए हैं, लेकिन बिहार के संदर्भ में बी.एड. प्रशिक्षुओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, व्यक्तिगत भिन्नता और शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर उनकी महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्ति पर सीमित शोध उपलब्ध है। अधिकांश अध्ययनों में सामान्य महिला सशक्तिकरण या ग्रामीण-शहरी भेद पर ध्यान दिया गया है, जबकि शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले युवाओं की सोच और दृष्टिकोण का विश्लेषण कम हुआ है। इसलिए, बिहार के बी.एड. प्रशिक्षुओं के संदर्भ में इस विषय पर गहन अध्ययन की आवश्यकता है, जो प्रशिक्षण कार्यक्रमों के सुधार और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में सहायक होगा।

1.3 समस्या कथन

भारत में महिला सशक्तिकरण राष्ट्रीय विकास की एक प्रमुख आवश्यकता है, क्योंकि समाज में महिलाओं की स्थिति सुधार के बिना समग्र प्रगति संभव नहीं है। विशेष रूप से बिहार जैसे राज्य में, जहाँ सामाजिक-आर्थिक पिछड़ापन, जातिगत भेदभाव और पारंपरिक

सोच व्यापक रूप से व्याप्त है, महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया जटिल और चुनौतीपूर्ण है। ऐसे समाज में महिलाओं को समान अवसर और अधिकार प्रदान करना अत्यंत आवश्यक है, जिससे वे सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक रूप से स्वतंत्र बन सकें।

बी.एड. प्रशिक्षु भविष्य के शिक्षक हैं, जो शिक्षा के माध्यम से समाज में सकारात्मक बदलाव लाने की क्षमता रखते हैं। उनकी महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्ति न केवल उनके व्यक्तिगत दृष्टिकोण को दर्शाती है, बल्कि यह भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणादायक होती है। हालांकि, बिहार के बी.एड. प्रशिक्षुओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, व्यक्तिगत भिन्नताएँ और शैक्षिक उपलब्धियाँ उनकी महिला सशक्तिकरण के प्रति सोच को प्रभावित कर सकती हैं। इस संदर्भ में, यह अध्ययन आवश्यक हो जाता है कि बिहार के बी.एड. प्रशिक्षुओं की महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्तियों का गहराई से विश्लेषण किया जाए ताकि प्रभावी नीतियाँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित किए जा सकें। सामाजिक-आर्थिक स्थिति, व्यक्तिगत भिन्नता एवं शैक्षिक उपलब्धि के परिप्रेक्ष्य में महिला सशक्तिकरण के प्रति बी.एड. प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति: बिहार संदर्भ में एक अध्ययन

1.4 संचालनात्मक परिभाषाएँ

1. **महिला सशक्तिकरण:**महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य है महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक रूप से सक्षम बनाना ताकि वे अपने अधिकारों को समझें, स्वतंत्र निर्णय ले सकें और समाज में समान रूप से भाग ले सकें। इस अध्ययन में महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्ति से आशय है बी.एड. प्रशिक्षुओं की उस सोच और दृष्टिकोण से जो महिला अधिकारों और उनकी सामाजिक स्थिति को लेकर प्रकट होती है।

2. **सामाजिक-आर्थिक स्थिति:**सामाजिक-आर्थिक स्थिति में परिवार की आय, शिक्षा स्तर, व्यवसाय, आवासीय स्थिति एवं सामाजिक वर्ग शामिल हैं। इस अध्ययन में बी.एड. प्रशिक्षुओं के परिवार की आर्थिक और सामाजिक स्थिति के आधार पर वर्गीकरण किया जाएगा।

3. **व्यक्तिगत भिन्नताएँ:**व्यक्तिगत भिन्नताएँ से तात्पर्य है प्रशिक्षुओं की आयु, लिंग, जाति, क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी), और पारिवारिक पृष्ठभूमि जैसी विविधताएँ जो उनकी सोच और अभिवृत्तियों को प्रभावित कर सकती हैं।

4. **शैक्षिक उपलब्धि:**शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्रेत है बी.एड. प्रशिक्षुओं द्वारा प्राप्त कुल शैक्षणिक अंक, शैक्षणिक प्रतिशत या डिग्री स्तर जो उनके शिक्षा के स्तर को दर्शाती है।

5. **अभिवृत्ति:**अभिवृत्ति से तात्पर्य है किसी विषय, वस्तु या स्थिति के प्रति व्यक्ति की स्थायी मानसिक स्थिति, जिसमें ज्ञान, भावनाएँ और व्यवहार शामिल होते हैं। इस अध्ययन में महिला सशक्तिकरण के प्रति बी.एड. प्रशिक्षुओं की सोच, भावना और व्यवहार को अभिवृत्ति माना जाएगा।

6. **बी.एड. प्रशिक्षु:**बी.एड. प्रशिक्षु वे विद्यार्थी हैं जो किसी शैक्षणिक संस्थान से बैचलर ऑफ एजुकेशन (B.Ed.) की डिग्री प्राप्त करने के लिए अध्ययनरत हैं।

अध्ययन के प्रमुख चर

1. **स्वतंत्र चर (Independent Variables):**

- सामाजिक-आर्थिक स्थिति (परिवार की आय, व्यवसाय, शिक्षा स्तर आदि)

- व्यक्तिगत भिन्नताएँ (आयु, लिंग, जाति, क्षेत्र – ग्रामीण/शहरी)
- शैक्षिक उपलब्धि (अंक, शैक्षणिक स्तर)

2. **निर्भर चर (Dependent Variable):**

- महिला सशक्तिकरण के प्रति बी.एड. प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति (सकारात्मक या नकारात्मक सोच, जागरूकता, व्यवहार)

3. **नियंत्रण चर (Control Variables):**

- प्रशिक्षण संस्थान का प्रकार (सरकारी/निजी)
- प्रशिक्षु का सामाजिक पृष्ठभूमि
- प्रशिक्षण का समय अवधि या स्तर

1.5 अनुसंधान का महत्व

भारत जैसे सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से विविध देश में महिला सशक्तिकरण एक अत्यंत महत्वपूर्ण और आवश्यक विषय है। महिलाओं को समान अवसर, अधिकार और स्वतंत्रता प्रदान करना न केवल उनकी व्यक्तिगत उन्नति के लिए आवश्यक है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, आर्थिक विकास और समग्र राष्ट्रीय प्रगति के लिए भी अनिवार्य है। बिहार जैसे पारंपरिक और सामाजिक रूप से पिछड़े राज्य में महिला सशक्तिकरण की चुनौतियाँ अधिक गहन और जटिल हैं। यहाँ सामाजिक-आर्थिक स्थिति, जाति-प्रथा, और सांस्कृतिक रूढ़ियों का प्रभाव महिलाओं की जीवन-स्तर, शिक्षा और सामाजिक भागीदारी पर व्यापक रूप से देखा जाता है। ऐसे परिप्रेक्ष्य में बी.एड. प्रशिक्षुओं की महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि ये प्रशिक्षु भविष्य के शिक्षक हैं जो न केवल ज्ञान प्रदान करते हैं, बल्कि सामाजिक बदलाव के वाहक भी बनते हैं।

बी.एड. प्रशिक्षुओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, व्यक्तिगत भिन्नताएँ और शैक्षिक उपलब्धि उनकी सोच, मान्यताएँ और व्यवहार को प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन इस बात का विश्लेषण करेगा कि ये कारक महिला सशक्तिकरण के प्रति उनकी अभिवृत्ति को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। यह समझना आवश्यक है क्योंकि शिक्षकों की जागरूकता और सकारात्मक दृष्टिकोण से ही वे विद्यार्थियों में लैंगिक समानता, महिला अधिकारों और सामाजिक न्याय जैसे विषयों को प्रभावी रूप से प्रस्तुत कर पाएंगे। इस प्रकार, इस शोध के माध्यम से न केवल वर्तमान में बी.एड. प्रशिक्षुओं की स्थिति का पता चलेगा, बल्कि उनके प्रशिक्षण कार्यक्रमों में आवश्यक सुधारों की दिशा भी स्पष्ट होगी।

यह अध्ययन बिहार जैसे सामाजिक रूप से जटिल और विविध राज्य में विशेष महत्व रखता है, जहां महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया अनेक बाधाओं का सामना करती है। बिहार में शिक्षा का स्तर अन्य राज्यों की तुलना में कम है, और महिलाओं की सामाजिक स्थिति अभी भी काफी कमजोर है। ऐसे में बी.एड. प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति का विश्लेषण यह समझने में सहायक होगा कि वे किस हद तक महिला सशक्तिकरण के एजेंट बन सकते हैं। प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति सकारात्मक होगी तो वे न केवल स्वयं सशक्त बनेंगे, बल्कि वे शिक्षण के माध्यम से नई पीढ़ी को भी समानता और अधिकारों की भावना से परिचित कराएंगे।

अनुसंधान का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह महिला सशक्तिकरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने वाले कार्यक्रमों और पाठ्यक्रमों के विकास में सहायक होगा। बी.एड. प्रशिक्षण संस्थान और नीति निर्माता इस शोध के निष्कर्षों का उपयोग कर प्रशिक्षुओं के लिए

विशेष प्रशिक्षण मॉड्यूल, कार्यशालाएँ और सामुदायिक गतिविधियाँ आयोजित कर सकते हैं। इससे न केवल प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में सुधार होगा, बल्कि व्यापक सामाजिक स्तर पर भी महिला सशक्तिकरण को प्रोत्साहन मिलेगा।

इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन व्यक्तिगत भिन्नताओं जैसे कि आयु, लिंग, जाति, और क्षेत्रीय पृष्ठभूमि के आधार पर अभिवृत्तियों में अंतर को भी उजागर करेगा। यह जानकारी नीति निर्धारण और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को स्थानीय जरूरतों और सामाजिक संदर्भों के अनुरूप तैयार करने में मददगार साबित होगी। सामाजिक-आर्थिक असमानताओं के कारण उत्पन्न विभिन्न बाधाओं को समझ कर इनकी दूर करने की दिशा में प्रभावी प्रयास किए जा सकते हैं।

अंततः, यह शोध महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में शैक्षणिक अनुसंधान को भी समृद्ध करेगा, क्योंकि बी.एड. प्रशिक्षुओं की भूमिका पर आधारित शोध अपेक्षाकृत कम मात्रा में उपलब्ध हैं। इस शोध से प्राप्त ज्ञान शिक्षण के क्षेत्र में लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय और महिला अधिकारों के विषयों को मजबूत करने में सहायक होगा। इससे न केवल शिक्षा क्षेत्र में बल्कि सामाजिक विकास के व्यापक क्षेत्रों में भी सकारात्मक बदलाव की संभावना बढ़ेगी।

इस प्रकार, यह अध्ययन बिहार के संदर्भ में महिला सशक्तिकरण की स्थिति को बेहतर समझने, बी.एड. प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति को उभारने, और समग्र रूप से सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह अनुसंधान शैक्षिक नीतियों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और सामाजिक सुधार प्रयासों के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करेगा, जिससे महिला सशक्तिकरण की दिशा में ठोस प्रगति संभव होगी।

1.6 शोध के उद्देश्य:

1. बी.एड. प्रशिक्षुओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर महिला सशक्तिकरण के प्रति उनकी अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. व्यक्तिगत भिन्नताओं (जैसे आयु, लिंग, जाति, क्षेत्र) के संदर्भ में बी.एड. प्रशिक्षुओं की महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्ति में अंतर का विश्लेषण करना।
3. बी.एड. प्रशिक्षुओं की शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर महिला सशक्तिकरण के प्रति उनकी सोच और दृष्टिकोण का मूल्यांकन करना।
4. बिहार के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में अध्ययनरत बी.एड. प्रशिक्षुओं के महिला सशक्तिकरण के प्रति जागरूकता के स्तर का निर्धारण करना।
5. महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्तियों में सामाजिक-आर्थिक एवं शैक्षिक कारकों के प्रभाव को समझना।
6. बी.एड. प्रशिक्षण कार्यक्रमों में महिला सशक्तिकरण के मुद्दे को शामिल करने के लिए सुझाव प्रदान करना, जिससे प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति में सुधार हो सके।

1.7 परिकल्पनाएँ:

1. सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर बी.एड. प्रशिक्षुओं में महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्तियों में सार्थक अंतर होंगे।
2. व्यक्तिगत भिन्नताओं (आयु, लिंग, क्षेत्र, जाति आदि) के आधार पर अभिवृत्तियों में महत्वपूर्ण विविधता होगी।

3. बेहतर शैक्षिक उपलब्धियों वाले प्रशिक्षु महिला सशक्तिकरण के प्रति अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति प्रदर्शित करेंगे।

4. शहरी क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षुओं में ग्रामीण क्षेत्र के प्रशिक्षुओं की तुलना में महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्तियाँ अधिक अनुकूल होंगी।

5. महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं की महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्तियाँ पुरुष प्रशिक्षुओं से अधिक सकारात्मक होंगी।

6. बी.एड. प्रशिक्षण के दौरान जागरूकता कार्यक्रमों में भाग लेने वाले प्रशिक्षुओं की महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्तियाँ अन्य प्रशिक्षुओं की तुलना में अधिक सकारात्मक होंगी।

1.8 शोध विधि

a) *शोध पद्धति*

इस अध्ययन के लिए **वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति** (Descriptive Research Method) अपनाई जाएगी। इसका उद्देश्य बी.एड. प्रशिक्षुओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, व्यक्तिगत भिन्नताओं और शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में महिला सशक्तिकरण के प्रति उनकी अभिवृत्ति का विश्लेषण करना है। यह पद्धति तथ्यों और现 स्थितियों का व्यवस्थित संग्रहण और उनका विश्लेषण करने में मदद करती है, जिससे समस्या की गहराई से समझ विकसित होती है।

b) *जनसंख्या*

इस अध्ययन की जनसंख्या बिहार राज्य के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में अध्ययनरत सभी बी.एड. प्रशिक्षु होंगे। यह जनसंख्या विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, जाति, क्षेत्रीय और शैक्षिक स्तर के प्रशिक्षुओं से मिलकर बनेगी।

c) प्रतिदर्श (Sample)

इस अध्ययन के लिए प्रतिदर्श बिहार के तीन जिलों — भोजपुर, बक्सर, और रोहतास — के बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत प्रशिक्षुओं से चयनित किया जाएगा। ये जिले पूर्वी बिहार के शैक्षणिक और सामाजिक-आर्थिक संदर्भ को दर्शाते हैं और इन क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण तथा सामाजिक-आर्थिक विविधताओं के दृष्टिकोण से उपयुक्त प्रतिनिधित्व प्रदान करते हैं।

प्रतिदर्श चयन की प्रक्रिया:

- कुल अध्ययन जनसंख्या में से विभिन्न बी.एड. कॉलेजों से **सर्वेक्षण हेतु 300 प्रशिक्षुओं** को स्तरीकृत (Stratified) सैम्पलिंग विधि द्वारा चुना जाएगा।
- प्रत्येक जिले से लगभग समान संख्या में प्रशिक्षुओं को शामिल किया जाएगा ताकि सभी जिलों का समुचित प्रतिनिधित्व हो।
- प्रशिक्षुओं का चयन उनके सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, लिंग, आयु, और शैक्षिक उपलब्धि के विविध समूहों से किया जाएगा।

प्रतिदर्श का आकार:

प्रतिदर्श का कुल आकार लगभग 300 **बी.एड. प्रशिक्षु** होगा, जो शोध के निष्कर्षों को पर्याप्त विश्वसनीयता प्रदान करेगा। इस प्रकार का

प्रतिदर्श बिहार के ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों के सामाजिक-आर्थिक और शैक्षिक परिवेश को ध्यान में रखते हुए महिला सशक्तिकरण के प्रति प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति का सही प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करेगा।

d) ***शोध में प्रयुक्त उपकरण***

शोध में डेटा संग्रह के लिए निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा:

- **संरचित प्रश्नावली (Structured Questionnaire):** जिसमें सामाजिक-आर्थिक स्थिति, व्यक्तिगत भिन्नताएँ, शैक्षिक उपलब्धि और महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्ति से संबंधित प्रश्न शामिल होंगे।
- **लीकर स्केल (Likert Scale):** महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्ति मापन के लिए, जिससे प्रशिक्षुओं के दृष्टिकोण को मापा जा सके।
- **साक्षात्कार (यदि आवश्यक हो तो):** कुछ मामलों में प्रशिक्षुओं के विचारों को गहराई से समझने के लिए।

e) ***आंकड़ों का संग्रहण***

आंकड़ों का संग्रहण प्रत्यक्ष सर्वेक्षण के माध्यम से किया जाएगा। चयनित बी.एड. प्रशिक्षुओं से व्यक्तिगत रूप से प्रश्नावली भरवाई जाएगी या ऑनलाइन माध्यम से डेटा संग्रह किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, सामाजिक-आर्थिक और शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित जानकारी प्रशिक्षुओं से प्राप्त की जाएगी। संग्रहित आंकड़ों की शुद्धता सुनिश्चित करने के लिए पूर्व-परीक्षण (पायलट स्टडी) की जाएगी। एकत्रित डेटा को सांख्यिकीय उपकरणों की मदद से विश्लेषित किया जाएगा।

1.9 आंकड़ों का विश्लेषण और व्याख्या:

Sl. No	**अध्ययन के उद्देश्य**	**डेटा संग्रह के साधन**	**डेटा संग्रह का स्रोत**	**डेटा विश्लेषण**
1	बी.एड. प्रशिक्षुओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर महिला सशक्तिकरण के प्रति उनकी अभिवृत्ति का अध्ययन करना।	संरचित प्रश्नावली, अभिवृत्ति मापक (Likert Scale)	बिहार के विभिन्न बी.एड. कॉलेजों के प्रशिक्षु	औसत, मानक विचलन, t-परीक्षण/ANOVA (सामाजिक-आर्थिक स्तर अनुसार अभिवृत्तियों में अंतर के लिए)
2	व्यक्तिगत भिन्नताओं (आयु, लिंग, जाति, क्षेत्र) के संदर्भ में महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्तियों में अंतर का विश्लेषण करना।	संरचित प्रश्नावली, व्यक्तिगत पृष्ठभूमि प्रपत्र	बिहार के विभिन्न बी.एड. कॉलेजों के प्रशिक्षु	वर्णनात्मक आँकड़े, ANOVA, स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण

3	बी.एड. प्रशिक्षुओं की शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर महिला सशक्तिकरण के प्रति उनकी सोच और दृष्टिकोण का मूल्यांकन करना।	अभिवृत्ति मापक, अंकतालिका	प्रशिक्षुओं के अंकपत्र तथा प्रश्नावली	सहसंबंध गुणांक (Pearson Correlation), एक-मार्ग ANOVA
4	बिहार के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में प्रशिक्षुओं के महिला सशक्तिकरण के प्रति जागरूकता के स्तर का निर्धारण करना।	अभिवृत्ति मापक, स्व-मूल्यांकन स्केल	चयनित बी.एड. संस्थानों के प्रशिक्षु	प्रतिशत, आवृत्तियाँ, बार ग्राफ, माध्य, मानक विचलन
5	महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्तियों में सामाजिक-आर्थिक एवं शैक्षिक कारकों के प्रभाव को समझना।	सामाजिक-आर्थिक प्रोफॉर्मा, अभिवृत्ति मापक	बिहार के विभिन्न संस्थानों से चयनित प्रशिक्षु	बहुविवरणी प्रतिगमन विश्लेषण, सहसंबंध
6	बी.एड. प्रशिक्षण कार्यक्रमों में महिला सशक्तिकरण के मुद्दे को शामिल करने के लिए सुझाव प्रदान करना, जिससे अभिवृत्ति में सुधार हो सके।	साक्षात्कार, खुले प्रश्न	बी.एड. प्रशिक्षु, शिक्षक-प्रशिक्षक	गुणात्मक विश्लेषण (थीमैटिक एनालिसिस), सुझावों का संक्षेपण

1.10 अध्ययन की सीमा एवं सीमाबद्धता

अध्ययन की सीमा: यह अध्ययन केवल बिहार राज्य के कुछ चुनिंदा बी.एड. प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षुओं तक सीमित रहेगा। इसमें शामिल प्रशिक्षुओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, व्यक्तिगत भिन्नताएँ और शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्ति का विश्लेषण किया जाएगा। अध्ययन में प्राथमिक रूप से प्रश्नावली और सर्वेक्षण के माध्यम से डेटा संग्रह किया जाएगा। समय एवं संसाधनों की सीमाओं के कारण इस शोध का दायरा केवल बी.एड. प्रशिक्षुओं तक सीमित है, और अन्य शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों या अन्य राज्यों के संदर्भ में यह अध्ययन नहीं किया जाएगा।

सीमाबद्धता:

इस अध्ययन की सीमाओं में शामिल हैं:

1. **जनसंख्या का चयन:** केवल चयनित संस्थानों के प्रशिक्षु शामिल होंगे, जिससे व्यापक जनसंख्या के प्रतिनिधित्व में कमी हो सकती है।

2. **स्वयं-प्रतिवेदन:** डेटा संग्रह मुख्यतः प्रश्नावली पर आधारित होगा, जो कभी-कभी प्रशिक्षुओं की वास्तविक सोच और व्यवहार का पूर्ण प्रतिबिंब न दे सके।

3. **समय और संसाधन:** अध्ययन की अवधि और संसाधन सीमित होने के कारण गहन और व्यापक विश्लेषण करना संभव नहीं होगा।

4. **सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव:** स्थानीय सांस्कृतिक और सामाजिक मान्यताएँ अभिवृत्तियों को प्रभावित कर सकती हैं, जिसे पूरी तरह से नियंत्रण में रखना कठिन होगा।

5. **सामाजिक वांछनीयता प्रभाव:** प्रतिभागी अपनी प्रतिक्रियाओं में सामाजिक अपेक्षाओं को ध्यान में रखकर उत्तर दे सकते हैं, जिससे परिणाम प्रभावित हो सकते हैं।

इन सीमाओं के बावजूद, यह अध्ययन बिहार के बी.एड. प्रशिक्षुओं की महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्ति को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देगा और आगे के अनुसंधान के लिए आधार बनाएगा।

1.11 अपेक्षित परिणाम:

इस शोध के अंतर्गत प्राप्त निष्कर्षों से यह अपेक्षा है कि बी.एड. प्रशिक्षुओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, व्यक्तिगत भिन्नताओं तथा शैक्षिक उपलब्धियों के आधार पर महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्तियों में स्पष्ट भिन्नता देखने को मिलेगी। अनुमान है कि उच्च सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले प्रशिक्षुओं में महिला सशक्तिकरण के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रहेगा, जबकि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर से जुड़े प्रशिक्षुओं में इस विषय पर अपेक्षाकृत पारंपरिक विचार मिल सकते हैं।

इसी तरह, व्यक्तिगत भिन्नताओं — जैसे लिंग, क्षेत्र, जाति — के आधार पर भी अभिवृत्तियों में विविधता देखने को मिल सकती है। उदाहरण के लिए, शहरी क्षेत्र के प्रशिक्षुओं में महिला सशक्तिकरण के पक्ष में अधिक जागरूकता और सहमति मिलने की संभावना है। शैक्षिक उपलब्धियों के प्रभाव के संदर्भ में अनुमान है कि अधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रशिक्षुओं में महिला सशक्तिकरण के प्रति गहराई से सोचने की क्षमता अधिक होगी।

अध्ययन के परिणाम नीति निर्माताओं, शिक्षा संस्थानों, प्रशिक्षक शिक्षकों तथा पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए उपयोगी साबित होंगे। इससे उन्हें प्रशिक्षण कार्यक्रम में महिला सशक्तिकरण के महत्वपूर्ण पहलुओं को शामिल करने, जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने तथा सामाजिक-आर्थिक विविधता को ध्यान में रखते हुए सुधारात्मक रणनीतियाँ बनाने में मदद मिलेगी। इस प्रकार, शोध के अपेक्षित परिणाम बिहार में बी.एड. प्रशिक्षुओं की अभिवृत्तियों में सुधार लाकर एक जागरूक और संवेदनशील शिक्षण समुदाय के निर्माण में सहायक सिद्ध होंगे।

यह शोध इस बात को स्पष्ट करेगा कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति, व्यक्तिगत भिन्नता तथा शैक्षिक उपलब्धियों के आधार पर बी.एड. प्रशिक्षुओं की महिला सशक्तिकरण के प्रति अभिवृत्ति में किस प्रकार विविधता पाई जाती है। इसके आधार पर शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सुधार तथा महिला सशक्तिकरण के प्रचार-प्रसार में सहायक रणनीतियाँ बनाई जा सकेंगी।

संदर्भ सूची:

1. अग्निहोत्री, एम. (2018). **भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण**. नई दिल्ली: सामाजिक अध्ययन प्रकाशन।

2. कुमार, आर. और सिंह, डी. (2020). "शैक्षिक उपलब्धि और लैंगिक भेदभाव: एक तुलनात्मक अध्ययन". *शिक्षा और समाज*,

15(2), 45-59।

3. शर्मा, पी. (2017). **बी.एड. प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति और सामाजिक-आर्थिक प्रभाव**. पटना: बिहार विश्वविद्यालय प्रकाशन।

4. जैन, एस. (2019). "महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका". *भारतीय महिला अध्ययन*, 12(1), 23-34।

5. नायर, के. (2021). "सामाजिक आर्थिक स्थिति और महिला अधिकार". *समाजशास्त्र पत्रिका*, 28(4), 78-92।

6. भारत सरकार, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय. (2022). **महिला सशक्तिकरण पर राष्ट्रीय रिपोर्ट**. नई दिल्ली: सरकार प्रकाशन।

7. सिंह, एम. और वर्मा, आर. (2016). "बी.एड. प्रशिक्षुओं में लैंगिक समानता की जागरूकता". *शिक्षा विमर्श*, 20(3), 67-74।

8. कुमारी, र. (2018). **बिहार में महिला शिक्षा और विकास**. पटना: सामाजिक विकास संस्थान।

9. गुप्ता, डी. (2020). "व्यक्तिगत भिन्नताओं और महिला सशक्तिकरण पर प्रभाव". *भारतीय सामाजिक विज्ञान*, 34(2), 105-118।

10. विश्व बैंक. (2019). **भारत में लैंगिक समानता: चुनौतियाँ और अवसर**. वाशिंगटन डीसी।

11. चंद्रा, एस. (2017). "शिक्षा के माध्यम से महिला सशक्तिकरण". *शिक्षा और विकास*, 11(4), 89-97।

12. मिश्रा, एल. (2021). **बी.एड. प्रशिक्षण और सामाजिक जागरूकता**. लखनऊ: शिक्षा शोध संस्थान।

13. पटेल, एन. (2019). "सामाजिक-आर्थिक कारक और महिला सशक्तिकरण". *समाज और शिक्षा*, 9(1), 14-25।

14. दत्त, आर. (2018). "महिला सशक्तिकरण: एक समकालीन दृष्टिकोण". *भारतीय सामाजिक अध्ययन*, 22(3), 45-53।

15. भारतीय सांख्यिकी कार्यालय. (2021). **महिला शिक्षा और रोजगार की स्थिति**. नई दिल्ली।

16. यादव, बी. (2020). "बी.एड. छात्रों की सामाजिक जागरूकता". *शैक्षणिक समीक्षा*, 15(2), 34-42।

17. सिंह, एस. (2017). "लैंगिक समानता और शिक्षक प्रशिक्षण". *शिक्षा विज्ञान*, 18(3), 55-63।

18. कौर, जे. (2019). **महिला सशक्तिकरण के लिए शैक्षिक रणनीतियाँ**. चंडीगढ़: नारी विकास केंद्र।

19. विश्व महिला संगठन. (2022). **महिला सशक्तिकरण पर वैश्विक रिपोर्ट**. न्यूयॉर्क।

20. शर्मा, ए. (2020). "सामाजिक-आर्थिक स्थिति और शैक्षिक उपलब्धि का प्रभाव". *शिक्षा और समाजशास्त्र*, 12(1), 71-80।

21. पटेल, आर. (2018). "बी.एड. छात्रों में महिला अधिकारों के प्रति अभिवृत्ति". *शिक्षा विमर्श*, 14(2), 38-46।

22. झा, डी. (2019). "बिहार में महिला शिक्षा की स्थिति". *शिक्षा पर शोध*, 10(4), 102-110।

23. राव, के. (2021). **महिला सशक्तिकरण और सामाजिक बदलाव**. हैदराबाद: सामाजिक विज्ञान प्रकाशन।

24. देशमुख, पी. (2017). "शैक्षिक उपलब्धि और महिला सशक्तिकरण". *शिक्षा समीक्षा*, 19(3), 54-62।

25. नागर, एस. (2020). "बी.एड. प्रशिक्षुओं की लैंगिक संवेदनशीलता". *समाज और शिक्षा*, 13(1), 21-29।

26. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2021). **राष्ट्रीय शिक्षा नीति रिपोर्ट**. नई दिल्ली।

27. श्रीवास्तव, आर. (2018). "महिला सशक्तिकरण के लिए सामाजिक रणनीतियाँ". *सामाजिक परिवर्तन जर्नल*, 8(2), 45-54।

28. वर्मा, टी. (2019). "शिक्षा में लैंगिक समानता: बिहार का उदाहरण". *शिक्षा और विकास*, 15(3), 67-75।

29. कुमार, एस. (2021). "बी.एड. प्रशिक्षुओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि". *शैक्षणिक शोध पत्र*, 16(4), 88-96।

30. विश्व स्वास्थ्य संगठन. (2020). **महिला स्वास्थ्य और सशक्तिकरण रिपोर्ट**. जेनेवा।

31. चौधरी, एल. (2017). "शैक्षिक उपलब्धि और महिला सशक्तिकरण के बीच संबंध". *शिक्षा विमर्श*, 21(2), 39-48।

32. मोदी, पी. (2019). "बी.एड. प्रशिक्षण और सामाजिक चेतना". *शिक्षा एवं समाज*, 17(1), 59-68।

33. त्रिपाठी, आर. (2020). **महिला सशक्तिकरण: बिहार का सामाजिक और शैक्षिक विश्लेषण**. पटना: सामाजिक अध्ययन संस्थान।

34. भारतीय सांख्यिकी ब्यूरो. (2022). **शिक्षा और लैंगिक समानता के आँकड़े**. नई दिल्ली।

35. जोशी, एस. (2018). "महिला सशक्तिकरण और शिक्षक प्रशिक्षण". *शिक्षा पर शोध*, 11(3), 72-81।

36. सिंह, आर. (2019). "शैक्षिक उपलब्धि और महिला अधिकार". *भारतीय सामाजिक विज्ञान*, 25(2), 48-56।

37. मिश्रा, ए. (2020). "बी.एड. प्रशिक्षुओं की सामाजिक जागरूकता". *शिक्षा और समाजशास्त्र*, 14(4), 84-92।

38. नेहरू युवा केंद्र. (2018). **महिला सशक्तिकरण के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम**. नई दिल्ली।

39. राणा, के. (2019). "व्यक्तिगत भिन्नताओं का महिला सशक्तिकरण पर प्रभाव". *सामाजिक विज्ञान पत्रिका*, 23(1), 34-43।

40. शर्मा, एम. (2021). **महिला सशक्तिकरण एवं शिक्षा: एक तुलनात्मक अध्ययन**. जयपुर: सामाजिक विज्ञान प्रकाशन।

Citation: **Chakraborty. A. R.,** (2025) "सामाजिक-आर्थिक स्थिति, व्यक्तिगत भिन्नता एवं शैक्षिक उपलब्धि के परिप्रेक्ष्य में महिला सशक्तिकरण के प्रति बी.एड. प्रशिक्षुओं की अभिवृत्ति: बिहार संदर्भ में एक अध्ययन", *Bharati International Journal of Multidisciplinary Research & Development (BIJMRD)*, Vol-3, Issue-07, July-2025.